गंभीर रोगों का शिकार बना रहा है आपका महंगा हेडफोन

अगर आप भी घंटों हेडफोन लगाकर गाने सुनना पसंद करते हैं या फिर वॉक करते समय वक्त काटने के लिए हेडफोन का इस्तेमाल करते हैं तो अगली बार ऐसा करने से पहले एक बार जरूर सोच लें. इस वॉर्निंग को भी एक बार जरूर याद कर लें. आपका ऐसा करना कई गंभीर रोगों को बुलावा देना हो सकता है. आइए जानते हैं हेडफोन के ज्यादा इस्तेमाल से आप किस तरह से बीमारियों से घिर सकते हैं.

इयरफोन या हेडफोन कान में लगाकर घूमने वाले लोगों को शायद इस बात का पता ही नहीं होता कि उनका पसंदीदा और महंगा हेडफोन उन्हें गंभीर रोगों का शिकार बना रहा है. दरअसल कान में लगने वाले हेडफोन की वजह से आपको कान में इंफेक्शन हो सकता है. जो कि एक समय के बाद गंभीर रूप घारण कर सकता है.

कान में इंनफेक्शन के अलावा आपका इयरफोन आपको कान के कैंसर का शिकार भी बना सकता है. अगर किसी व्यक्ति को कान में फंगल इंफेक्शन है और आप उसका इयरफोन इस्तेमाल करते हैं तो आपको भी इंफेक्शन होने का खतरा बढ़ सकता है जो कि आगे जाकर कैंसर का कारण बनता है. इससे बचने के लिए इयरफोन या हेडफोन का कम से कम इस्तेमाल करें और दूसरे का इयरफोन इस्तेमाल करना छोड़ दें.

एक अध्ययन में पाया गया है कि लंबे समय तक हेडफोन का प्रयोग करने से सुनने की क्षमता धीरे-धीरे कम होने लगती है. जब भी आप इसका इस्तेमाल करें तो कुछ समय का अंतराल लेकर ही करें.

लंबे समय के लिए कान में इयरफोन लगाकर गाने सुनने से हमारे कान सुन्न भी हो सकते हैं. इसी के साथ हम सुनने की शक्ति भी धीरे-धीरे कम हो जाती है. इयरफोन का इस्तेमाल लंबे समय तक करने से आपके कान में हवा का प्रवाह नहीं हो पाता है, जिससे कान में संक्रमण हो सकता है. इसके अलावा आप हमेशा के लिए अपने सुनने की शक्ति भी खो सकते हैं.

आंखों के लिए नुकसानदेह है रोज आईलाइनर लगाना

ज्यादातर कॉलेज और ऑफिस गोइंग लड़कियां हर रोज मेकअप एप्लाई करती हैं. इसमें बेस, लिपस्टिक के साथ ही आईलाइनर और काजल का इस्तेमाल भी शामिल है, लेकिन क्या आपको पता है कि रोज आईलाइनर लगाने से आपकी आंखों पर इसका बुरा असर पड़ता है. लगातार आईलाइनर लगाने के कई नुकसान हैं-

कम होती है आंखों की रोशनी: लगातार आईलाइनर एप्लाई करने से आंखों की रोशनी कम हो सकती है. अगर लैश लाइन की रेखा के भीतर आईलाइनर लगाया जाए तो इससे आंखों पर बुरा असर पड़ता है. इससे धुंधलापन और आंखों संबंधित समस्याएं हो सकती है.

आंखों में इंफेक्शन: अक्सर आपकी आंखों से पानी या इचिंग जैसी समस्या होती है. ये समस्या काजल और आईलाइनर लगाने के बाद ज्यादा बढ़ जाती है. दरअसल, आईलाइनर लगाते समय लिक्विड आंखों में चला जाता है जिससे आई इंफेक्शन हो सकती है.

सस्ते ब्रांड का आईलाइनर है और नुकसानदेह: सस्ता ब्रांड का आईलाइनर इस्तेमाल करने से आंखों में भारी इन्फेक्शन होने का खतरा बढ़ जाता है.

झुर्रियों की समस्या: आंखों के आसपास की स्किन काफी पतली होती है. लगातार आईलाइनर का इस्तेमाल करने से झुर्रियों की समस्या हो सकती है. लड़कियां आईलाइनर की शेप के चक्कर में आंखों को खीचती हैं जिससे झुर्रियां होने की संभावना बढ़ जाती है.

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

कुछ यूं शुरू हुई छपाई...

आज तुम कॉमिक्स पढ़ते हो, किताबें पढ़ते हो, अपना नंदन पढ़ते हो, लेकिन ये सब हाथ से लिखे हुए नहीं होकर छपे हुए होते हैं। जब मुद्रण यानी प्रिंटिंग का आविष्कार नहीं हुआ था, तब सारी पुस्तकें हाथ से ही लिखी जाती थीं। उसमें काफी श्रम तथा समय की जरूरत होती थी। श्रम तथा समय कम लगे इसी कारण मुद्रण कला का आरंभ हुआ।

छपाई का सफर

मुद्रण कला का प्रयोग पहली बार चीन में शुरू हुआ, जब 650 ई में भगवान बुद्ध की मूर्ति छापी गई। इतना ही नहीं, चीन की सहस्ंबुद्ध गुफाओं से हीरक सूत्र नामक मिली पुस्तक को ही संसार की पहली मुद्रित पुस्तक माना जाता है। सबसे पहली टाइप मशीन 1041 ई में चीन के केपी शैंग ने बनाई थी। चीनी-मिट्टी के बने ये टाइप अच्छी छपाई नहीं देते थे, इसलिए शैंग ने टीन के टाइप बनाए, लेकिन वो भी गीली स्याही पर अच्छा काम नहीं करते थे। फिर वांग चांग ने 1314 ई में लकड़ी के टाइप बनाए, जो चीनी भाषा के लिए उपयुक्त थे। लेकिन इसके बावजूद वांग चांग को टाइप के आविष्कार का श्रेय नहीं मिला, क्योंकि वांग चांग द्वारा बनाए गए टाइप शब्दों के थे, वर्णों के नहीं। इसीलिए अलग-अलग वर्णों के टाइप बनाने का श्रेय अंततः जर्मन के जॉन गुटनबर्ग को मिला। गुटनबर्ग ने इन टाइपों का आविष्कार 1440 से 1450 के बीच किया और 1456 ई में 42 लाइनों वाली बाइबिल छापी। इस बाइबिल को ही यूरोप की पहली मुद्रित पुस्तक माना जाता है। बाद में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप मुद्रण कला का निरंतर विकास होता चला गया।

भारत का पहला प्रेस

भारत में पहला प्रेस 6 दिसम्बर, 1556 को आया। इसके बारे में कहा जाता है कि यह प्रेस पुर्तगाल से ओबीसीनिया यानी वर्तमान इथोपिया के लिए भेजा गया था, किंतु उन दिनों स्वेज नहर नहीं बनी थी। इसलिए भारत होकर ही ओबीसीनिया जाना पड़ता था। लेकिन किन्हीं कारणों से यह प्रेस ओबीसीनिया न जाकर गोवा में ही रह गया। और सन् 1557 में यहीं सेंट जेवियर ने दौक्त्रीना क्रिस्ताओ नामक पुस्तक छपवाई। भारत में मुद्रण कला का व्यापक विस्तार बंगाल में हुआ। सन् 1778 में हुगली में बांग्ला भाषा का व्याकरण छपा।

भारतीय भाषाओं के टाइप बने

भारतीय भाषाओं में सबसे पहले तमिल भाषा के टाइप बनाए गए। नागरी लिपि के टाइप सबसे पहले यूरोप में बने।

अस्थानासी किंचेरी कृत चाइना इलस्ट्रेटा 1675 में प्रकाशित पहली पुस्तक है, जिसमें नागरी लिपि छपी। वर्ष 1771 में एक पुस्तक रोम में प्रकाशित हुई और इसे ही खड़ी बोली की प्रथम वर्णमाला पुस्तक माना जाता है।

भारत में बांग्ला तथा नागरी टाइप के जनक दो व्यक्ति थे, चार्ल्स विल्किंसन व पंचानन कर्मकार। विल्किंसन वो व्यक्ति थे, जिन्होंनें 1778 में पहली बार बांग्ला भाषा का व्याकरण छापा। उसके बाद 1779 में देवनागरी लिपि में पहली पुस्तक छपी हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण, इसे गिलक्राइस्ट ने छपवाया था।

शाही अंदाज वाला इम्पीरियल बगुला

आज हम बात करेंगे एक ऐसे बगुले की, जो भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है और इसे हिमालय की निचली पहाडियों में देखा जा सकता है। भारत के अलावा पहले ये बांग्लादेश, भूटान और म्यांमार में पाए जाते थे, लेकिन अभी कुछ समय पहले ये नेपाल में भी देखे गए हैं। इम्पीरियल हेरन नाम का ये पक्षी वेटलैंड्स या शांत जलधाराओं और नदियों के आस-पास ही देखा जाता है। मछली पसंद इस हेरन को लोग ग्रेट व्हाइट बेलीड हेरन भी कहते हैं। यह बगुला धरती पर पाया जाने वाला दूसरा सबसे बड़ा बगुला है, जिसकी लम्बाई 4 फीट तक और पंखों का फैलाव 6.5 फीट तक होता है। सुंदर दिखने वाले पक्षियों में शुमार इम्पीरियल हेरन गहरे ग्रे (सलेटी) रंग का होता है, जिसका पेट वाला हिस्सा सफेद होता है। इसी कारण इसे व्हाइट बेलीड हेरन कहा जाता है। इस पर आम बगुलों की तरह कोई धारियां नहीं पाई जातीं और न ही शरीर पर किसी प्रकार के कोई धब्बे। इसकी 7 इंच लम्बी चोंच काली होती है, जो आधार के पास और नोक पर हल्का सा हरापन लिए होती है। इसका मुंह हल्का सा हरापन लिए ग्रे रंग का होता है। प्रजनन के दिनों में गर्दन का पिछला वाला हिस्सा हल्का सलेटी हो जाता है और आगे वाले हिस्से में भी सिर्फ बीच में ही थोड़े से सफेद फर बचते हैं। बाकी सब ग्रे नजर आते हैं। इसके पंजे काले होते हैं।

इस बगुले की सबसे खास बात इसकी गर्दन है, जो विश्व में किसी बगुले कीसबसे लम्बी गर्दन मानी जाती है। इस गर्दन का रंग भी पूरे शरीर की तरह गहरा ग्रे न होकर उससे थोड़ा हल्का होता है और ऊपर जाकर क्राउन के पास ये फिर से गहरा हो जाता है, जिस वजह से इसकी खूबसूरती में चार चांद लग जाते हैं। लेकिन आज विश्व के कुछ सबसे बड़े पक्षियों में शामिल इस बगुले की जाति खतरे में है। आईयूसीएन ने अपनी रेड डाटा बुक में इसे क्रिटिकली एनडेंजर्ड श्रेणी में रखा है। धीरे-धीरे इसके आवास को खतरा पहुंच रहा है। इंसानी गतिविधियों का जंगल में बढ़ना, नदियों पर बड़ी मात्रा में बांध बनना और ग्लोबल वार्मिंग की वजह से नमी वाली भूमि में कमी होने के कारण ये धीरे धीरे खत्म हो रहे हैं। यही वजह है कि इनके संरक्षण की जरूरत महसूस की जा रही है। चील जैसे पक्षियों से इसके अंडों को नुकसान न पहुंचे, इस संबंध में प्रयास किए जा रहे हैं।